B II, Geog (Hon) - Paper IV Resource Geography

Date :
Page :

Human Resource मानव संसाधन

by Dr. R.K. Jha

भूपटल पर विद्यमान सारे संसाधनों में मानव सबसे महत्वपूर्ण एवं केन्द्रीय संसाधन है। कारण मानव प्रकृति प्रदत्त संसाधनों का उपभोक्ता तो है ही साथ ही सारे तत्वों को संसाधन में परिष्कृतकर्ता तथा सांस्कृतिक संसाधनों का निर्माणकर्ता भी मानव ही है। संसाधनों के निर्माण में मानवीय आवश्यकता, इच्छा एवं मानव के बुद्धि, कौशल व तकनीक का योगदान होता है। वो मानव ही प्रकृति में उपलब्ध तत्वों को संसाधन के रूप में परिणत कर अपने आवश्यकता की पूर्ति हेतु सामग्री तैयार करता है तथा उसका उपभोग भी करता है। वर्तमान आर्थिक विकास एवं सामाजिक सांस्कृतिक संयुक्त मानवीय प्रयास का परिणाम है। मानव वैसे तो वस्तुओं का निर्माता नहीं है परन्तु वातावरण में उपलब्ध विभिन्न तत्व सिर्फ तत्व हैं अगर मानव उसको संसाधन के रूप में विकसित कर उपभोग के लायक नहीं बनाता है। आज भी भूपटल पर कई महत्वपूर्ण खनिज जैसे अन्टार्कटिका में कोयला, कांगो एवं आमेजन बेसिन में सघन वन मानव के पहुँच से बाहर होने के कारण सिर्फ एक तत्व माने जाते हैं। उनका संसाधन के रूप में विकास नहीं हो पाने के कारण मानव की आवश्यकता की पूर्ति में कोई उपयोग नहीं है। अतः कह सकते हैं कि मानव ही वह महत्वपूर्ण संसाधन है जो सम्पूर्ण संसाधनों का निर्माता एवं उपभोक्ता है। जिससे मानव समाज वर्तमान आर्थिक विकास के शिखर पर पहुंचा है। अगर मानव संसाधन क्रियाशील न हो तो अन्य संसाधनों का विकास सम्भव नहीं है।

मानव के इतिहास के अध्ययन से पता चलता है कि मानव सभ्यता के प्रारंभिक काल से ही प्रकृति प्रदत्त तत्वों का संसाधन के रूप में उपयोग करता रहा है।

पाषाण युग, ताम्र युग

इसका स्पष्ट उदाहरण ..., ..., कांस्यकाल या लौह युग में मानव द्वारा अपनी आवश्यकता के लिये इन तत्वो से औजार एवं विभिन्न सामग्रियों का निर्माण है। मानवीय सभ्यता का विकास कृषि विकास के साथ प्रारंभ होना माना जाता है जब मानव समूहों ने स्थाई निवास का निर्माण कर रहना आरम्भ किया। इस काल में मानव कृषि कार्य हेतु भूमि, मिट्टी, जल की उपलब्धता को ध्यान में रखकर ही बस्ती बसाते थे। सिंधु घाटी सभ्यता, नील घाटी सभ्यता इत्यादि इसके प्रमाण है जैसे-जैसे मानव के बुद्धि कौशल का विकास हुआ है अपने आवश्यकता अनुसार पृथ्वी पर तत्वों की खोज कर उपयोग करता रहा और इस तरह कालक्रम में मानव सभ्यता का विकास हुआ और आज मानव समाज विकास के शिखर पर बैठा है।

किसी राज्य या देश के सम्पूर्ण आबादी को संसाधन नहीं माना जा सकता। मानव संसाधन का अनुपात ; उसकी दक्षता एवं कुशलता किसी प्रदेश के विकास के द्योतक है। मानव संसाधन को प्रभावित करने वाले अनेक तत्व है जिनमें से कुछ प्रमुख तत्वों का विवरण निम्न प्रकार है :—

(1) कार्यशील जनसंख्या :- कार्यशीलता की दृष्टि से किसी सभी देशों में जनसंख्या को सामान्यतया तीन वर्गों में विभक्त किया जाता है जो आयु पर आधारित होता है।

(क) 15 वर्ष से कम आयुवर्ग - अनुत्पादक - आबादी का यह भाग कार्यशील नहीं होता इसमें अधिकांशतः शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्र-छात्रा होते हैं जो अपने परिवार के कार्यशील व्यक्ति पर निर्भर होते हैं।

(ख) 15 वर्ष से 65 वर्ष आयुवर्ग :- इस आयुवर्ग की आबादी को कार्यशील की श्रेणी में रखा जाता है। जिस देश में इस आयु वर्ग की संख्या अधिक होती है वह देश मानव संसाधन में धनी माना जाता है परन्तु इस आयु समूह में भी कुछ आबादी अक्षम बेरोजगार होती है।

3

होते हैं तो उस प्रकार की आबादी और [illegible] आश्रितों की संख्या को बढ़ा देते हैं जो कार्यशील आबादी पर भार होता है और विकास में अवरोधक का काम करते हैं।

(i) 65 वर्ष से अधिक आयु वर्ग की आबादी जिसे प्रौढ़ कहा जाता है वे भी कार्यशील आबादी पर निर्भर होते हैं। जिसी देश में इनका अनुपात कम या अधिक होना कार्यशील आबादी पर उसी अनुपात में भार डालते हैं।

इस प्रकार जिस देश में कार्यशील आबादी का अनुपात अधिक हो और बेरोजगारी का दर कम हो वह देश आर्थिक प्रगति तीव्र गति से करता है।

(2) शिक्षा :- शिक्षा मानव संसाधन की कार्य दक्षता, कुशलता, ज्ञान को प्रभावित करता है, क्योंकि शिक्षा के विकास से ही आबादी में ज्ञान का विकास होता है। तकनीकी विकास ~~कार्यक्षमता~~ उपयोग एक दक्ष श्रमिक ही कर सकता है। अतः जिस देश में शिक्षा का विकास अच्छा होता है वहाँ कुशल, दक्ष कार्यशील आबादी मिलती है अर्थात शिक्षित मानव संसाधन विकास में अधिक सहायक होता है बनिस्पत अशिक्षित एवं [illegible] अकुशल मानव संसाधन के।

(3) स्वास्थ्य :- किसी देश के सक्षम मानव संसाधन के लिये अच्छा स्वास्थ्य का होना भी आवश्यक तत्व है कारण श्रमिकों के कार्य क्षमता पर स्वास्थ्य के स्तर का सीधा प्रभाव पड़ता है। जहाँ स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव होता है या गरीबी के कारण कुपोषण, उचित ~~स्वास्थ्य~~ एवं स्वास्थ्यवर्धक भोजन के अभाव ~~में~~ श्रमिकों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है जो अन्ततः आर्थिक विकास में बाधक साबित होता है। वहीं जहाँ गरीबी दर कम, स्वास्थ्य सुविधाओं की समुचित व्यवस्था होती है वहाँ व्यक्ति की कार्य क्षमता अधिक होती है और वह देश तीव्र गति से विकास करता है।

डा० [illegible] कुमार [illegible]